RAS MAINS TEST SERIES 2018

PAPER –II GENERAL KNOWLEDGE AND GENERAL STUDIES
Unit-II - **GEOGRAPHY**

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दें। निम्न प्रश्नों का उत्तर 15-15 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक निर्धारित है।

1. 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में अनुकूल लिंगानुपात (Sex ratio) वाले राज्य/केन्द्र शासित प्रदेशों के नाम बताइये ।

उत्तरः—2011 की जनगणना के अनुसार केरल (1084) व पुद्दूचेरी (1038) में ही लिंगानुपात अनुकूल अर्थात् 1000 से अधिक हैं ।

2. भारत में न्यूनतम साक्षरता (Literacy) वाले तीन राज्य लिखिए ।

उत्तरः—भारत में न्यूनतम साक्षरता वाले तीन राज्य क्रमशः बिहार, अरूणाचल प्रदेश एवं राजस्थान हैं।

3. लैटेराइट मृदा से क्या आशय हैं ?

उत्तरः- अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में जल की घुलन प्रक्रिया द्वारा मृदा के उर्वर तत्वों के मृदा की ऊपरी परत से नीचली परत में विस्थापित होने से निर्मित मृदा लेटेराइट मृदा है, उदाहरण - केरल व मेघालय पठार में विस्तृत मृदा ।

4. राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना क्या हैं ?

उत्तरः- इस योजना के अन्तर्गत नदियों में प्रदुषण रोकथाम हेतु गंदे जल को शोधित करना, नदी तट विकास कार्य, वृक्षारोपण व नदी के स्वच्छीकरण से संबंधित जागरूकता वृद्धि करने वाले कार्यक्रम सम्मिलित हैं।

5. शोला वन कहाँ पाये जाते हैं ?

उत्तरः- तमिलनाडु के नीलगिरी क्षेत्र में शोलावन पाये जाते हैं। यहाँ चीड़, देवदार जैसे वृक्षों की अधिकता होती हैं।

6. उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार (Tropical Evergreen Forest) वन पर टिप्पणी लिखिए ।

उत्तरः-उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन 200 सेमी. से अधिक वर्षा वाले प्रदेशों में पाये जाते हैं। भारत में मुख्यतः मालबार तटीय प्रदेश, अण्डमान निकोबार व लक्षद्वीप समूह में पाये जाते हैं। इस प्रकार के वनों में महोगनी, सिनकोना, रबर, नारियल, आयरन वुड प्रमुख है। यहाँ मुख्यतः कठोर लकड़ी के लम्बे वृक्ष मिलते है जो वर्ष पर्यन्त हरे-भरे रहते हैं। कठोर लकड़ी का उपयोग भवन निर्माण में किया जाता है एवं सिनकोना जैसे वृक्षों से औषधीय उत्पाद निर्मित किये जाते हैं। ये वन पारिस्थितिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

7. काली मृदा (Verti Soil) की भारतीय संदर्भ में क्या महत्ता हैं ?

उत्तरः- प्रायद्वीपीय पठार में दक्कन लावा पठार के क्षेत्र में काली मृदा पायी जाती है, जिसकी उत्पत्ति ज्वालामुखी क्रिया द्वारा निर्मित बेसाल्ट चट्टानों के अपक्षय से हुई। यह मृदा खनिज के दृष्टिकोण से संतुलित है एवं पर्याप्त नमी संचित रखने की क्षमता होती है। यह मृदा कपास की फसल के लिए सर्वाधिक उपयुक्त मृदा है। काली मृदा के क्षेत्र में नदी घाटियों में काली जलोढ़ मृदा है जो गन्ने की कृषि के लिए अनुकूल है।

8. "भारत में खनिज संसाधनों की सम्पन्नता का मुख्य आधार भारत की भू-गर्भिक चट्टानी संरचना हैं।" समझाइये।

उत्तरः- भारत में शैल संरचना संबंधी पर्याप्त विविधता पायी जाती है। चट्टानों में ही खनिजों के भण्डार समाहित होते हैं, इसी कारण भारत खनिज संसाधनों की दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न है।

आर्कियन संरचना आधारभूत शैल संरचना के रूप लगभग सम्पूर्ण भारत में स्थित हैं । इसी संरचना से अन्य शैल संरचना का निर्माण हुआ है। आर्कियन संरचना के क्षेत्र में आण्विक खनिजों के भण्डार पाये जाते है (उदाः- झारखण्ड - सिंहभूम में यूरेनियम) । धारवाड़ संरचना जो कि प्रायद्वीपीय पठारी भारत में विस्तृत हैं, धात्विक खनिजों से सम्पन्न है। यहाँ लौहा, मैंगनीज, क्रोमाइट, सोना इत्यादि उत्खनित होते है। कुडप्पा संरचना में धात्विक व अधात्विक दोनों प्रकार के खनिज उपलब्ध हैं। विंध्यन संरचना अधात्विक खनिजों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इसका विस्तार झारखण्ड, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र होते हुए राजस्थान तक है जहाँ चूना पत्थर, बालुका पत्थर, चीनी मिट्टी इत्यादि पाये जाते हैं ।

इसी प्रकार गौड़वाना संरचना प्रायद्वीपीय पठार में विकसित कोयला प्रधान संरचना है। यहाँ भारत का 95% से अधिक कोयला भण्डार है जो बंगाल, झारखण्ड, उड़ीसा, दामोदर घाटी आदि क्षेत्रों में विस्तृत है। इसी क्रम में दक्कन ट्रेप संरचना बॉक्साइट भण्डार व टर्शियरी संरचना पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस भण्डार की दृष्टि से भारत को खनिज सम्पन्न राष्ट्र बनाती हैं।

PREVIOUS